प्रश्न:- रासो, रासक, रासाबंध, रासा, रास ~~आदि~~ की व्युत्पति बताते हुए रासो काव्य की विशेषतायें बतायें।

उत्तर:- रासो शब्द को रस, रासक, रहस्य, रसायन आदि शब्दों से व्युत्पन्न बताया जाता है। गार्सां द तासी ने 'रासो' को रहस्य से और शुक्ल जी ने रसायन से व्युत्पन्न बताया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे नाट्य रासक से ~~व्युत्पन्न~~ निष्पन्न बताते हैं। शारदा तनय के 'भाव प्रकाशन' नामक ग्रंथ में नृत्य के चार भेद बताये हैं - ~~दंड रासक, मंडल रासक~~, शृंखला, लता, पिंडी, भेदक। फिर लता के तीन भेद किए गये हैं - दंड रासक, मंडल रास नाट्य रासक। द्विवेदी जी इसी नाट्य रासक से रासो का संबंध जोड़ते हैं।

FEB 2003

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
							1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28							

Scanned with CamScanner

अपभ्रंश के आचार्य विरहांक ने कहा है रासा या रासाबंध में अडिल्ला, घत्ता, रड्डा, घोसा, दोहा आदि छंद प्रयुक्त होते हैं। अपभ्रंश के कवि 'स्वयंभू' के अनुसार रासो या रासाबंध पद्धरि, घत्ता, घोसा, आदि के कारण जनमन अभिराम करता है। परवर्ती विद्वानों ने स्वयंभू और विरहांक की परिभाषाओं में छंदों की विविधता देखकर रासो काव्यों के एक प्रकार छंद-वैविध्यपरक रासो की कल्पना कर ली। द्विवेदीजी की व्युत्पत्ति का ही आधार लेकर रासो काव्य का एक दूसरा प्रकार भी कल्पित कर लिया गया – गीत-नृत्यपरक रासो काव्य। इन वर्गीकरणों को असत्यापित करने के लिए उदाहरण भी गिना दिए गए। उपदेश रसायन - जिनदत्त सूरि, भरतेश्वरबाहुबली रास - शालिभद्र सूरि, जीवदया रास - आसगु, चंदनबाला रास - आसगु, बीसलदेव रासो - नरपति नाल्ह, आदि की रचनायें गीत-नृत्यपरक हैं। पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, संदेश-रासक, विजयपाल रासो, रघुमान रासो आदि छंद वैविध्यपरक हैं। गीत नृत्यपरक रासो आकार में छोटे होते हैं और छंद वैविध्य-परक रासो बड़े। इसमें नृत्य और अभिनय की प्रमुखता होती है, लेकिन यह अंतर विवेचना के क्रम में ठहरता नहीं है। देखा यह गया है कि गीतनृत्यपरक रासो काव्यों में भी छंदों की विविधता है और छंदवैविध्यपरक रासो काव्यों में भी गीत, नृत्य, अभिनय की प्रधानता रहती है। इसका अर्थ है कि वैशिष्ट्य निर्धारण में मनमानी से काम लिया गया है। खुद विद्वानों के अनुसार रासो रासा छंद से विकसित हुआ। रासा छंद में इकतीस (३१) मात्राएँ होती हैं और इसमें वीरगाथा गाने की भी परिपाटी होती है। लेकिन रासो काव्यों में हम सिर्फ रासा छंद ही नहीं पाते अन्य छंदों का भी समावेश देखते हैं। इसलिए रासो को रासा छंद का ही विकास मानना उचित नहीं है।

दरअसल "रासो" शब्द रस से व्युत्पन्न है। यह रस के बहुवचनत्व का

MAR 2003
S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30 31

Scanned with CamScanner

द्योतक है। चंदवरदायी ने इस रासो की लगभग परिभाषा देते हुए कहा है –

'रासउ असंभु नवरस सरस छंदु चंदु किअ अमिसम,
शृंगार वीर करुणा विभच्छ भय अद्भुत: सन्त सम।'

रासो काव्य की विशेषतायें :–

(1) धार्मिकता :- रासो काव्य जैन कवियों द्वारा भी रचे गये और हिन्दू कवियों द्वारा भी। जैन कवियों ने अपने रासो काव्यों में प्राय: जैन तीर्थंकरों के चरित्राख्यान लिखकर जैन धार्मिकता को व्यवस्थित करने का प्रयास किया। हिन्दू रासो काव्य मंगलाचरण के रूप में विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति करते हैं। ये अपने चरित नायकों के ऐतिहासिक व्यक्तित्व को उड़ान और कल्पना की सहायता से कहीं-कहीं इस तरह मोड़ते हैं कि उसमें से आध्यात्मिकता झलकने लगती है। चंदवरदायी ने तो अपने नायक पृथ्वीराज के व्यक्तित्व को ही अलौकिक रंग से रंगने की; "जैसे ही पृथ्वीराज का जन्म हुआ दिल्ली दहल गयी, कन्नौज पर बिजली गिर गयी और शेषनाग भी कुलबुला उठे।" चंदवरदायी अपनी पत्नी से धिक्कारे जाने के बाद 'पृथ्वीराज रासो' में ही 'दशावतार खण्ड' लिखते हैं। इसमें दसो अवतारों का विशद वर्णन है। हम्मीर रासो के रचनाकार ने भी हमीर के चरित्र को पौराणिक संदर्भ दिया है। चन्द्रवंश और सूर्यवंशकीकथा लिखकर उसमें हमीर को अँटाने की कोशिश निश्चय ही उसे महान परंपराओं से जोड़कर *निजन्धर चरित्र बनाने की कोशिश की गयी थी।

अन्य रासो कवियों ने भी प्रशस्ति गायन के क्रम में अपने चरितनायक को अलौकिकता के रंग में रंगने का प्रयास किया। इसलिए रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं –"आदि काल के कवि मनुष्य को ईश्वर रूप में सिरजते हैं।"

FEB 2003

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
							1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28								

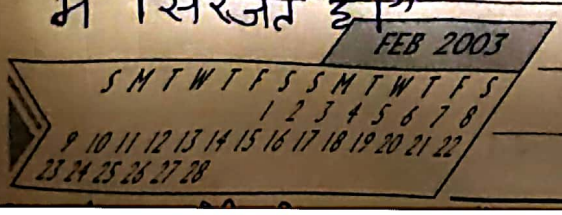

Scanned with CamScanner

(2) आश्रयक - रासो कवि आश्रित कवि थे, वे किसी न किसी दरबार से जुड़े थे। आश्रित कवि चाहे कितना ही प्रतिभावान क्यों न हो वह लोभ, लाभ और भय से मुक्त होकर कविता में अपना इच्छित संसार रच नहीं पाता। रासो कवि भी अपने आश्रयदाताओं के स्तुतिगायन में जिस तरह लगे दिखते हैं उससे इस कथन की पुष्टि होती है। कवियों ने चरितनायकों की दानवीरता और मैदानी वीरता की बढ़-चढ़ कर प्रशंसा की। इसी कारण इनका वर्णन अतिशयोक्तिमूलक है।

(3) वीरगाथात्मकता

(4) शृंगारिकता - (कीर्तिलता और कीर्तिपताका की बात छोड़कर) → इनमें वीरगाथात्मकता है।

(5) भाषा - राजस्थानी।

(6) शैली - डिंगल - पिंगल।

(7) छंद - (सिद्धों-नाथों को छोड़कर शेष सब पहले प्रश्न वाला)

(8) कथानक रूढ़ियाँ -

Scanned with CamScanner